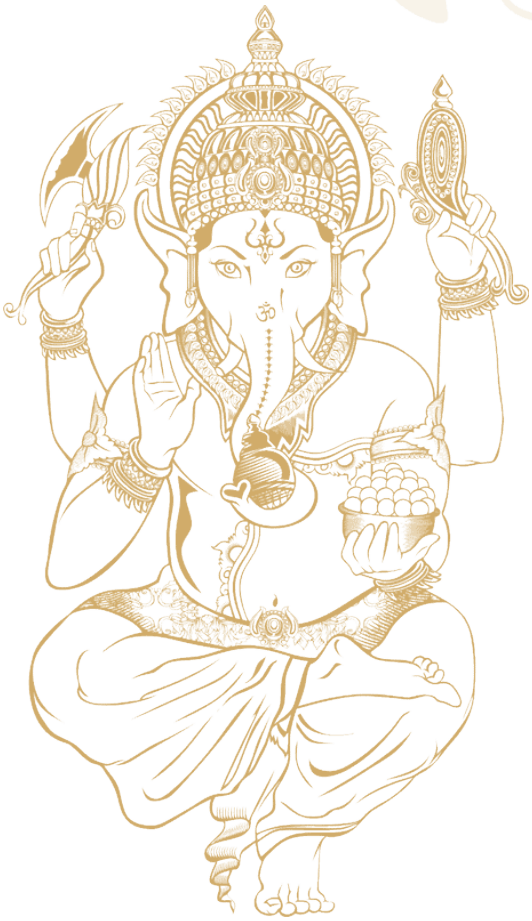

Anmol Arvind Jaiswal

22 Aug 2006

06:46 PM

Ghatkopar

Model: Web-MyKundli

Order No: 119526501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**22/08/2006**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**18:46:00 घंटे**
इष्ट	31:02:13 घटी
स्थान	**Ghatkopar**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:06:00 उत्तर
रेखांश	72:55:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	18:07:40 घंटे
वेलान्तर	-00:02:58 घंटे
साम्पातिक काल	16:10:30 घंटे
सूर्योदय	06:21:06 घंटे
सूर्यास्त	19:01:01 घंटे
दिनमान	12:39:55 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	05:21:45 सिंह
लग्न के अंश	01:51:52 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**कर्क - चन्द्र**
नक्षत्र-चरण	**आश्लेषा - 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	वरियान
करण	शकुनि
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डू-डूंगरमल
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1928	श्रावण	31
पंजाबी	संवत : 2063	भाद्रपद	7
बंगाली	सन् : 1413	भाद्रपद	5
तमिल	संवत : 2063	आवनी	6
केरल	कोल्लम : 1182	चिगंम	6
नेपाली	संवत : 2063	भाद्रपद	6
चैत्रादि	संवत : 2063	भाद्रपद	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2063	श्रावण	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 22:31:20
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:55:57 घंटे
जन्म योग _____: आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग ____: वरियान
योग समाप्ति काल _____: 24:19:06 घंटे
जन्म योग _____: वरियान
सूर्योदय कालीन करण ____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 09:34:45 घंटे
जन्म करण _____: शकुनि
भयात _____: 24:35:06
भभोग _____: 66:22:04
भोग्य दशा काल _____: बुध 10 वर्ष 8 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: पौष
तिथि _____: 2-7-12
दिन _____: बुधवार
नक्षत्र _____: अनुराधा
योग _____: व्याघात
करण _____: नाग
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: तुला
सूर्य _____: सिंह
चन्द्र _____: सिंह
मंगल _____: कन्या
बुध _____: मिथुन
गुरु _____: तुला
शुक्र _____: वृश्चिक
शनि _____: कर्क
राहु _____: धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

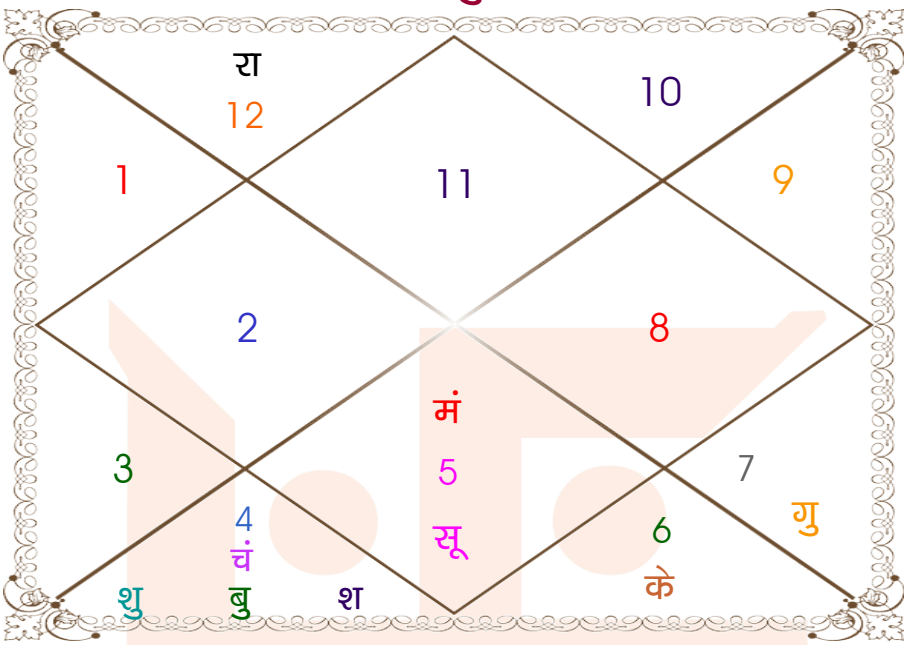

चन्द्र कुंडली

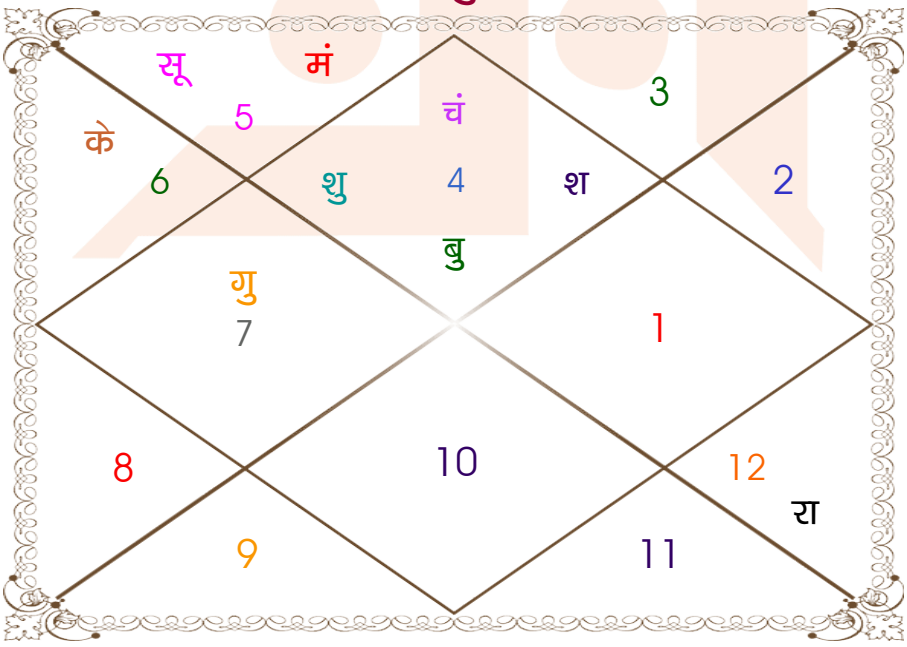

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

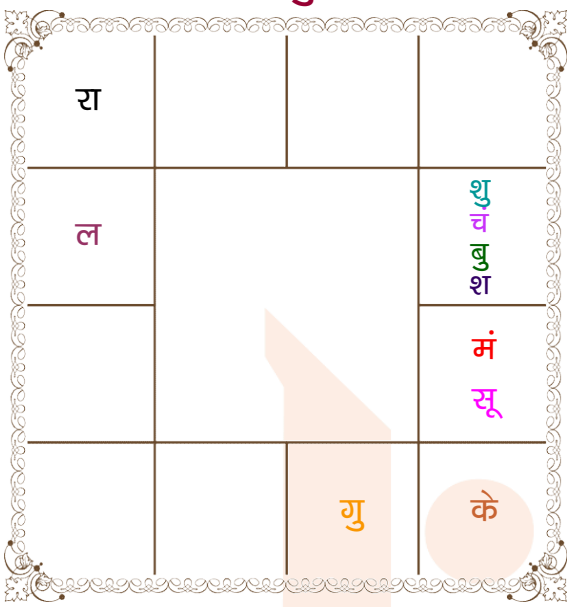

लग्न कुंडली

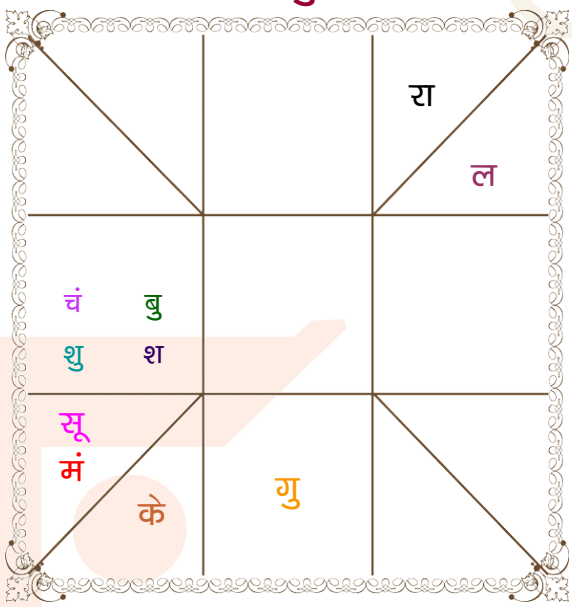

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 8मा 3दि

बुध

22/08/2006

27/04/2120

बुध	26/04/2017
केतु	26/04/2024
शुक्र	26/04/2044
सूर्य	26/04/2050
चन्द्र	26/04/2060
मंगल	27/04/2067
राहु	26/04/2085
गुरु	27/04/2101
शनि	27/04/2120

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 6मा 4दि

सिद्धा

26/02/2020

25/02/2027

सिद्धा	07/07/2021
संकटा	26/01/2023
मंगला	07/04/2023
पिंगला	27/08/2023
धान्या	27/03/2024
भ्रामरी	05/01/2025
भद्रिका	26/12/2025
उल्का	25/02/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	01:51:52	428:58:26	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
सूर्य			सिंह	05:21:45	00:57:49	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	मूलत्रिकोण
चंद्र			कर्क	21:37:33	12:04:22	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	सूर्य	स्वराशि
मंगल			सिंह	25:23:49	00:38:11	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
बुध		अ	कर्क	25:35:46	01:57:51	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
गुरु			तुला	18:10:11	00:07:33	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	17:55:57	01:13:39	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
शनि			कर्क	22:49:19	00:07:35	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	01:32:06	00:03:50	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
केतु	व		कन्या	01:32:06	00:03:50	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
हर्ष	व		कुंभ	19:20:43	00:02:18	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	मंगल	---
नेप	व		मक	24:09:34	00:01:36	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	---
प्लूटो	व		धनु	00:10:29	00:00:25	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	---
दशम भाव			वृश्चि	10:38:19	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	सूर्य	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:02

लग्न-चलित

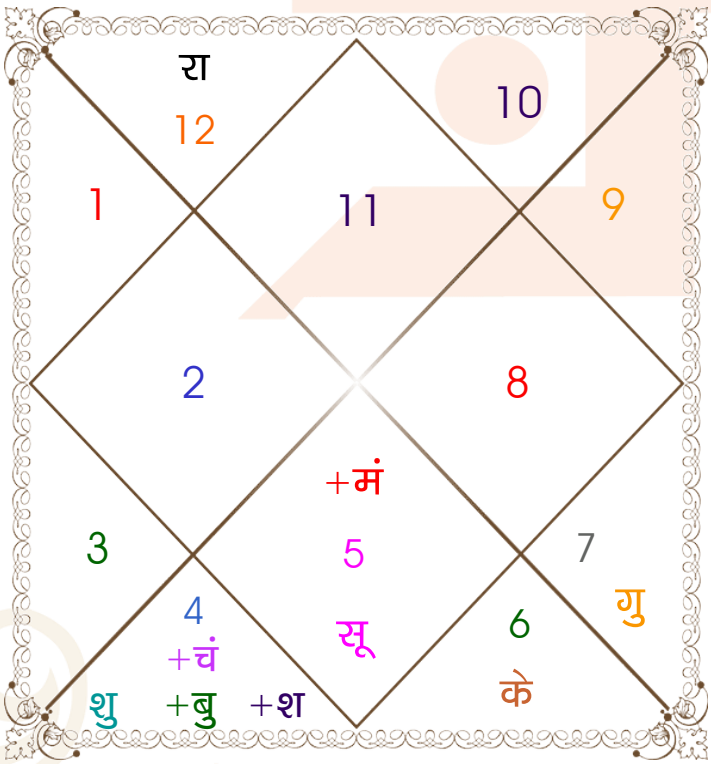

चन्द्र कुंडली

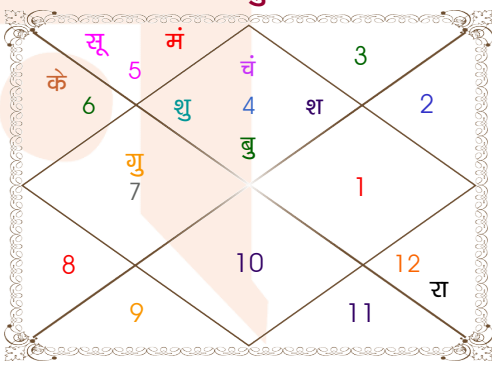

नवमांश कुंडली

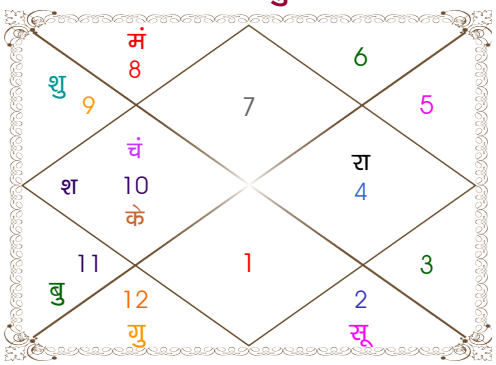

ASTROTRACK

Ramashrya B-312/12 I.P. Colony Delhi

+91 8076-099-404

https/www.astrotrack.in, E-mail info.astrotrack@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	18:19:36	कुम्भ	01:51:52
2	कुम्भ	18:19:36	मीन	04:47:21
3	मीन	21:15:05	मेष	07:42:50
4	मेष	24:10:35	वृष	10:38:19
5	वृष	24:10:35	मिथुन	07:42:50
6	मिथुन	21:15:05	कर्क	04:47:21
7	कर्क	18:19:36	सिंह	01:51:52
8	सिंह	18:19:36	कन्या	04:47:21
9	कन्या	21:15:05	तुला	07:42:50
10	तुला	24:10:35	वृश्चिक	10:38:19
11	वृश्चिक	24:10:35	धनु	07:42:50
12	धनु	21:15:05	मकर	04:47:21

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	01:51:52
2	मीन	09:13:41
3	मेष	12:37:10
4	वृष	10:38:19
5	मिथुन	05:49:00
6	कर्क	01:36:04
7	सिंह	01:51:52
8	कन्या	09:13:41
9	तुला	12:37:10
10	वृश्चिक	10:38:19
11	धनु	05:49:00
12	मकर	01:36:04

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

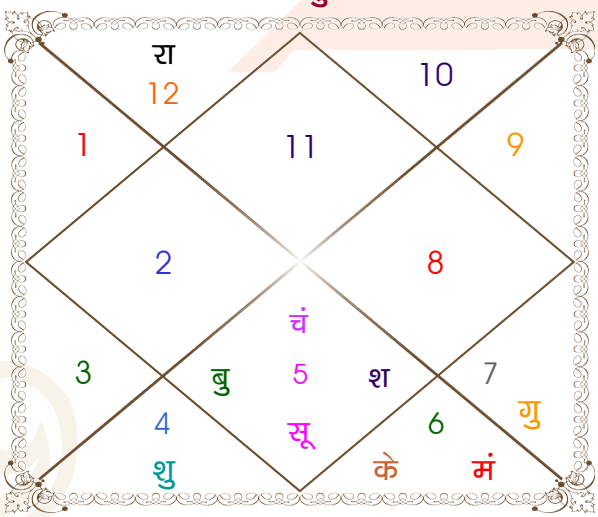

भाव कुंडली

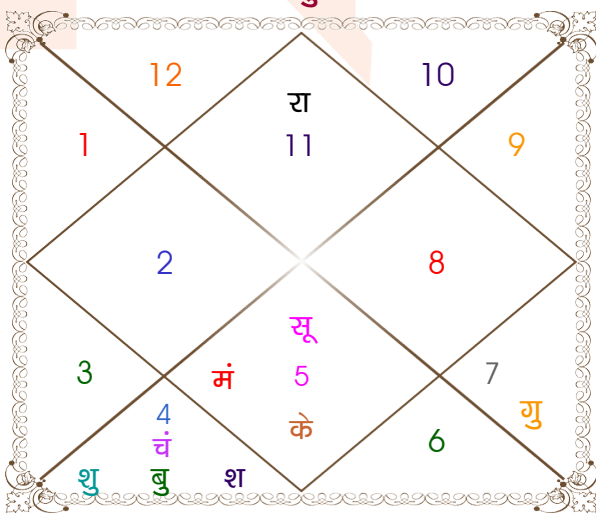

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 8 मास 3 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
22/08/2006		26/04/2017		26/04/2024		26/04/2044		26/04/2050	
26/04/2017		26/04/2024		26/04/2044		26/04/2050		26/04/2060	
	00/00/0000	केतु	22/09/2017	शुक्र	26/08/2027	सूर्य	13/08/2044	चंद्र	25/02/2051
	00/00/0000	शुक्र	22/11/2018	सूर्य	26/08/2028	चंद्र	12/02/2045	मंगल	26/09/2051
	22/08/2006	सूर्य	30/03/2019	चंद्र	26/04/2030	मंगल	20/06/2045	राहु	27/03/2053
सूर्य	27/05/2007	चंद्र	29/10/2019	मंगल	26/06/2031	राहु	15/05/2046	गुरु	27/07/2054
चंद्र	25/10/2008	मंगल	26/03/2020	राहु	26/06/2034	गुरु	03/03/2047	शनि	25/02/2056
मंगल	23/10/2009	राहु	14/04/2021	गुरु	24/02/2037	शनि	13/02/2048	बुध	26/07/2057
राहु	11/05/2012	गुरु	21/03/2022	शनि	26/04/2040	बुध	19/12/2048	केतु	24/02/2058
गुरु	17/08/2014	शनि	30/04/2023	बुध	25/02/2043	केतु	26/04/2049	शुक्र	26/10/2059
शनि	26/04/2017	बुध	26/04/2024	केतु	26/04/2044	शुक्र	26/04/2050	सूर्य	26/04/2060

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
26/04/2060		27/04/2067		26/04/2085		27/04/2101		27/04/2120	
27/04/2067		26/04/2085		27/04/2101		27/04/2120		00/00/0000	
मंगल	22/09/2060	राहु	07/01/2070	गुरु	14/06/2087	शनि	30/04/2104	बुध	23/09/2122
राहु	11/10/2061	गुरु	01/06/2072	शनि	26/12/2089	बुध	08/01/2107	केतु	21/09/2123
गुरु	16/09/2062	शनि	08/04/2075	बुध	02/04/2092	केतु	17/02/2108	शुक्र	22/07/2126
शनि	26/10/2063	बुध	26/10/2077	केतु	08/03/2093	शुक्र	18/04/2111	सूर्य	23/08/2126
बुध	22/10/2064	केतु	13/11/2078	शुक्र	07/11/2095	सूर्य	30/03/2112		00/00/0000
केतु	21/03/2065	शुक्र	13/11/2081	सूर्य	26/08/2096	चंद्र	30/10/2113		00/00/0000
शुक्र	21/05/2066	सूर्य	08/10/2082	चंद्र	26/12/2097	मंगल	09/12/2114		00/00/0000
सूर्य	26/09/2066	चंद्र	08/04/2084	मंगल	02/12/2098	राहु	15/10/2117		00/00/0000
चंद्र	27/04/2067	मंगल	26/04/2085	राहु	27/04/2101	गुरु	27/04/2120		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 8 मा 13 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
26/04/2024		26/08/2027		26/08/2028		26/04/2030		26/06/2031	
26/08/2027		26/08/2028		26/04/2030		26/06/2031		26/06/2034	
शुक्र	15/11/2024	सूर्य	14/09/2027	चंद्र	15/10/2028	मंगल	21/05/2030	राहु	08/12/2031
सूर्य	15/01/2025	चंद्र	14/10/2027	मंगल	20/11/2028	राहु	24/07/2030	गुरु	02/05/2032
चंद्र	26/04/2025	मंगल	04/11/2027	राहु	19/02/2029	गुरु	19/09/2030	शनि	22/10/2032
मंगल	06/07/2025	राहु	29/12/2027	गुरु	11/05/2029	शनि	25/11/2030	बुध	27/03/2033
राहु	05/01/2026	गुरु	16/02/2028	शनि	16/08/2029	बुध	25/01/2031	केतु	30/05/2033
गुरु	16/06/2026	शनि	14/04/2028	बुध	10/11/2029	केतु	19/02/2031	शुक्र	28/11/2033
शनि	26/12/2026	बुध	04/06/2028	केतु	15/12/2029	शुक्र	01/05/2031	सूर्य	22/01/2034
बुध	16/06/2027	केतु	26/06/2028	शुक्र	27/03/2030	सूर्य	22/05/2031	चंद्र	23/04/2034
केतु	26/08/2027	शुक्र	26/08/2028	सूर्य	26/04/2030	चंद्र	26/06/2031	मंगल	26/06/2034

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
26/06/2034		24/02/2037		26/04/2040		25/02/2043		26/04/2044	
24/02/2037		26/04/2040		25/02/2043		26/04/2044		13/08/2044	
गुरु	03/11/2034	शनि	26/08/2037	बुध	19/09/2040	केतु	22/03/2043	सूर्य	01/05/2044
शनि	06/04/2035	बुध	06/02/2038	केतु	19/11/2040	शुक्र	01/06/2043	चंद्र	10/05/2044
बुध	22/08/2035	केतु	15/04/2038	शुक्र	10/05/2041	सूर्य	22/06/2043	मंगल	17/05/2044
केतु	18/10/2035	शुक्र	24/10/2038	सूर्य	01/07/2041	चंद्र	27/07/2043	राहु	02/06/2044
शुक्र	28/03/2036	सूर्य	21/12/2038	चंद्र	25/09/2041	मंगल	21/08/2043	गुरु	17/06/2044
सूर्य	16/05/2036	चंद्र	28/03/2039	मंगल	25/11/2041	राहु	24/10/2043	शनि	04/07/2044
चंद्र	05/08/2036	मंगल	03/06/2039	राहु	29/04/2042	गुरु	20/12/2043	बुध	20/07/2044
मंगल	01/10/2036	राहु	24/11/2039	गुरु	14/09/2042	शनि	25/02/2044	केतु	26/07/2044
राहु	24/02/2037	गुरु	26/04/2040	शनि	25/02/2043	बुध	26/04/2044	शुक्र	13/08/2044

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
13/08/2044		12/02/2045		20/06/2045		15/05/2046		03/03/2047	
12/02/2045		20/06/2045		15/05/2046		03/03/2047		13/02/2048	
चंद्र	29/08/2044	मंगल	20/02/2045	राहु	08/08/2045	गुरु	23/06/2046	शनि	27/04/2047
मंगल	08/09/2044	राहु	11/03/2045	गुरु	21/09/2045	शनि	08/08/2046	बुध	15/06/2047
राहु	06/10/2044	गुरु	28/03/2045	शनि	12/11/2045	बुध	18/09/2046	केतु	05/07/2047
गुरु	30/10/2044	शनि	17/04/2045	बुध	29/12/2045	केतु	05/10/2046	शुक्र	01/09/2047
शनि	28/11/2044	बुध	05/05/2045	केतु	17/01/2046	शुक्र	23/11/2046	सूर्य	18/09/2047
बुध	24/12/2044	केतु	13/05/2045	शुक्र	13/03/2046	सूर्य	08/12/2046	चंद्र	17/10/2047
केतु	03/01/2045	शुक्र	03/06/2045	सूर्य	29/03/2046	चंद्र	01/01/2047	मंगल	06/11/2047
शुक्र	03/02/2045	सूर्य	09/06/2045	चंद्र	25/04/2046	मंगल	18/01/2047	राहु	29/12/2047
सूर्य	12/02/2045	चंद्र	20/06/2045	मंगल	15/05/2046	राहु	03/03/2047	गुरु	13/02/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 6, 2
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	77%	भाग्योदय, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	72%	धन, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	66%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	62%	दम्पति, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	55%	दम्पति
नीलम	शनि	55%	शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	38%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

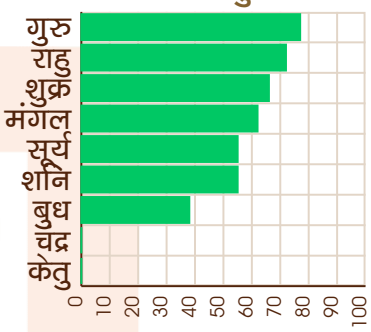

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	26/04/2017	61%	0%	62%	56%	77%	72%	55%	72%	0%
केतु	26/04/2024	35%	0%	69%	38%	77%	72%	34%	59%	16%
शुक्र	26/04/2044	35%	0%	62%	50%	77%	78%	61%	78%	3%
सूर्य	26/04/2050	67%	2%	69%	38%	83%	53%	34%	59%	0%
चंद्र	26/04/2060	61%	15%	62%	50%	77%	66%	55%	59%	0%
मंगल	27/04/2067	61%	2%	75%	12%	83%	66%	55%	59%	3%
राहु	26/04/2085	35%	0%	50%	38%	77%	72%	61%	84%	0%
गुरु	27/04/2101	61%	2%	69%	12%	89%	53%	55%	72%	0%
शनि	27/04/2120	35%	0%	50%	50%	77%	72%	67%	78%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	22/08/2006-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है । दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता हैऔर स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– शुक्र
(26/04/2024 - 26/04/2044)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 26/04/2024 को आरम्भ होकर 26/04/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित का रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(26/04/2024 - 26/08/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/04/2024 को प्रारंभ होकर 26/04/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 26/04/2024 को प्रारंभ होकर 26/08/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है और विवाह, प्रेम और रति का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित रहेंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है, जिससे स्वास्थ्य की हानि संभव है। आपका कोई शत्रु नहीं होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(26/08/2027 - 26/08/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 26/04/2024 को प्रारंभ होकर 26/04/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 26/08/2027 को प्रारंभ होकर 26/08/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली में लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में सरकारी अधिकारी आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। अपमान से बचाव करें। चरित्र की रक्षा करें अन्यथा स्त्रियों के कारण बेइज्ज़ती हो सकती है। मित्रों की संख्या में कमी होगी क्योंकि आपकी किसी से नहीं बनेगी। यात्राएं खूब होंगी। इस सबके बावजूद आपका व्यवहार संतुलित रहेगा।

कोई चोट लग सकती है, अतः आवश्यक सावधानियां बरतें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 से 9 रत्ती के माणिक की सोने या तांबे की अंगूठी दाहिने हाथ की अनामिका में रविवार के दिन प्रातःकाल सूर्य की प्रार्थना और सूर्य नमस्कार के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(26/08/2028 - 26/04/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 26/04/2024 को प्रारंभ हुई थी और 26/04/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 26/08/2028 से प्रारंभ होकर 26/04/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

छठे भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके मातहतों, सहकर्मियों और कर्मचारियों से संबंध बिगड़ सकते हैं। कार्यालय में कुव्यवस्था फैल सकती है, कर्ज़ बढ़ सकता है।

शरीर में दुर्बलता महसूस होगी। आवेश में आकर गलत काम कर सकते हैं जिससे हानि और पछ्तावा हो सकता है। खानपान में संयम बरतें वर्ना जिगर की व्याधि हो सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध, चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।